आधुनिक हिन्दी और तेलुगु साहित्य में आलोचना के विभिन्न सिद्धांतों का विकास

हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद

पीएच. डी. उपाधि के लिए

प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

1992

प्रस्तुतकर्त्री

शकीला ख़ानम

एम. ए., एम. फिल.

निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष

प्रोफेसर शशि मुदिराज

डी. लिट्.

हिन्दी विभाग

हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय

हैदराबाद-500 134

THE UNIVERSITY OF HYDERABAD

(A Central University, established in 1974 by an Act of the Parliament)
CENTRAL UNIVERSITY P. O., HYDERABAD-500 134.

TELEX : 425-2050
PHONES : 253901, 902
Ext. 3450

:HASHI MUDIRAJ
D.Litt.
PARTMENT OF HINDI
OF HUMANITIES.

Residence :
Faculty Qr. No. B-11,
Central University Campus
Hyderabad-500 134.

Date :

CERTIFICATE

This is to certiy that **Mrs. SHAKEELA KHANAM,** has worked under my supervision for her Ph.D thesis entitled **'AADHUNIK HINDI AUR TELUGU SAHITYA MEIN AALOCHANA KE VIBHINNA SIDDHANTON KA VIKAS'** at the University of Hyderabad. This thesis is represents her independent work and does not constitute part of any material submitted for any degree here or elsewhere.

12/10/92

(SHASHI MUDIRAJ)
Supervisor

Prof. & Head, Dept. of Hindi
School of Humanities
University of Hyderabad
HYDERABAD-500 134

G.V. Subrahmanyam
13.10.92

Dean,
School of Humanities,
University of Hyderabad,
HYDERABAD-500 134.

DECLARATION

I hereby declare that the work presented in this thesis entitled **'AADHUNIK HINDI AUR TELUGU SAHITYA MEIN AALOCHANA KE VIBHINNA SIDDHANTON KA VIKAS'** has been done by me under the supervision of Professor Shashi Mudiraj, Head, Department of Hindi, University of Hyderabad, for the award of Ph.D. degree and is the result of my own efforts. It has not been submitted for any degree or diploma in any other university.

Place: Hyderabad.

Date: 12-10-1992.

(SHAKEELA KHANAM)

भूमिका

आज तक भारतीय साहित्य के विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों का जो तुलनात्मक अध्ययन हुआ उसमें अधिकांशत: भारतीय साहित्य की एकता के स्वरूप को प्रतिपादित किया गया । आज तक जो भी तुलनात्मक अध्ययन हिंदी और तेलुगु के संदर्भ में किये गये हैं, उनमें आधुनिक हिंदी और तेलुगु की आलोचना के संदर्भ में शोध नहीं हुआ है । अत: मैंने पी॰एच॰डी॰ शोधकार्य के लिए "आधुनिक हिंदी और तेलुगु साहित्य में आलोचना के विभिन्न सिद्धांतों का विकास" नामक विषय लिया है । इस विषय से इस तथ्य का निर्धारण हो सकता है कि आधुनिक हिंदी और तेलुगु साहित्यिक आलोचना पर संस्कृत तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्रों का प्रभाव कहाँ तक रहा है, उनके माध्यम से दोनों साहित्यों में किन - किन नवीन आलोचना - सिद्धांतों का विकास हुआ है, दोनों साहित्यों में आलोचना सिद्धांतों के विकास में कौन-कौन से साम्य और वैषम्य हैं, हिंदी और तेलुगु की आलोचना का स्तर क्या है ? आधुनिक हिंदी और तेलुगु साहित्य में आलोचना एक स्वतंत्र और व्यवस्थित विधा के रूप में विकसित हुई । भारतीय आधुनिक युग की समान प्रवृत्तियों और विकासेतिहास के कारण लगभग सभी भारतीयभाषाओं के आधुनिक युगीन साहित्य की कुछ प्रवृत्तियाँ समानान्तर विकसित हैं । हिंदी और तेलुगु साहित्य में भी प्रवृत्तियों का विकास लगभग समान दिखाई देता है । अतएव इन प्रवृत्तियों और विधाओं की व्याख्या, समीक्षा और मूल्यांकन करने की

प्रक्रिया में आलोचना के सिद्धांतों का विकास हुआ है । इन सिद्धांतों के स्रोत भी समान हैं । हिन्दी और तेलुगु दोनों में आलोचना सिद्धांत संस्कृत काव्य-शास्त्र और पाश्चात्य काव्यशास्त्र से प्रभाव और प्रेरणा सूत्र ग्रहण करते रहे हैं । हिंदी और तेलुगु साहित्य में आलोचना की प्रवृत्तियों के विकास का तुलनात्मक परिशीलन करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है ।

आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतेन्दु युग जिसे हिंदी आलोचना का प्रवर्तन काल समझा जाता है इसमें युग - प्रवर्तक आलोचक की दृष्टि से भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने सर्वप्रथम काव्य की आत्मा पर दृष्टिपात करते हुए रसको अपने चिन्तन में प्रमुख स्थान दिया है और उसकी अतीन्द्रियता एवं अलौकिकता से लोगों को भिज्ञ कराया है । इनके साथ - साथ प्रेमघन, बाल-कृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, गंगाप्रसाद अग्निहोत्री और बालमुकुन्द गुप्त आदि आलोचकों ने इन्हीं सिद्धांतों का अनुसरण किया । भारतेन्दु कालीन आलोचना कई दृष्टियों से यूरोप की पुनर्जागरण - कालीन आलोचना के समकक्ष सिद्ध होती है । यूरोप में पुनर्जागरण - काल की आलोचना के पीछे यूनानी और मध्यकालीन आलोचना की पृष्ठभूमि थी, तो भारत में भारतेन्दु कालीन आलोचना के पीछे संस्कृत काव्यशास्त्र, रीतिकालीन विचारधारा और यूरो-पीय आलोचना के प्रेरक तत्व थे । यूरोप की पुनर्जागरण कालीन आलोचना का विकास हिंदी में भारतेन्दु - काल के सदृश रहा ।

आलोचना के सिद्धांत - निर्माण के लिए जिस तर्क, कर्वश, खण्डन - मण्डन की शैली की आवश्यकता होती है, उसकीपूर्ति "द्विवेदी युगीन" गद्य-साहित्य के विकास से सम्भव हुई और साहित्य चिन्तन नवीन दिशा की ओर उन्मुख हुआ । इस काल में महावीर प्रसाद द्विवेदी, मिश्रबन्धु, श्यामसुन्दर दास, पद्मसिंह शर्मा, कृष्ण बिहारी मिश्र आदि आलोचकों ने रस, रीति,

गुण, अलंकार और परंपरा दर्शनवाद आदि सिद्धांतों की आलोचना की है। वस्तुतः पाश्चात्य परंपरादर्शनवादी युग में एवं द्विवेदी युग की मान्यताओं में साम्य दृष्टिगोचर होता है। शास्त्रीयता के प्रति विशिष्ट आग्रह, रीतिकालीन आचार्यत्व के अनुगमन की प्रवृत्ति, आदर्श अहं का भाव एवं प्रभाविव्यंजक, निर्णयात्मक एवं तुलनात्मक आलोचना का आविर्भाव इस काल के आलोचनात्मक मानदण्ड थे। इसी युग में आलोचना के सूत्रों एवं मान्यताओं के आधार पर आलोचना के क्षेत्र में शुक्ल जी का प्रवेश हुआ। आ॰ रामचन्द्र शुक्ल ने रस सिद्धांत में रसानुभूति की अभिनव व्याख्या द्वारा इसका प्रसार एवं विकास किया। मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांतों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर साहित्य सिद्धांतों के विरोध द्वारा उन्होंने साहित्य और जीवन का अन्योन्याश्रित - संबंध स्थापित करने का प्रयास किया तथा पाश्चात्य एवं पौरास्त्य सिद्धांतों के साथ ही नवीन एवं प्राचीन काव्य सिद्धांतों के समन्वय द्वारा उन्होंने आलोचना का मार्गदर्शन किया। शुक्ल परम्परा के अन्य आलोचकों में आ॰ गुलाब राय, जगन्नाथ प्रसाद शर्मा तथा लक्ष्मीनारायण सुधांशु के नाम विशेष रूपसेउल्लेखनीय है।

छायावादी आलोचकों के अंतर्गत श्री नन्द दुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा शान्तिप्रिय द्विवेदी आदि विशेष रूप में आते हैं जिन्होंने स्वच्छन्दतावाद, यथार्थवाद, मानवतावाद, बिंबवाद, प्रतीकवाद तथा रहस्यवाद आदि के माध्यम से नवीन आलोचना सिद्धांतों का विकास किया था। इसके बाद मार्क्सवाद से प्रभावित होकर डा० रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह "चौहान" प्रकाशचन्द्र गुप्त तथा डा० नामवर सिंह आदि आलोचकों ने प्रगतिवादी आलोचना का रूप निर्मित किया। इसके अंतर्गत प्रगतिवादी सिद्धांत जैसे मार्क्सवाद, यथार्थवाद, आदर्शवाद, समाजवाद, आदि नवीन आलोचनात्मक सिद्धांतों की व्याख्या की गई। इसी काल में डा० नगेन्द्र, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी जैसे मनोविश्लेषणवादी आलोचक हुए जिन पर फ्रायड, युंग जैसे पाश्चात्य

आलोचकों का प्रभाव रहा । अज्ञेय, धर्मवीर भारती जैसे आलोचकों को भी आधुनिक हिन्दी साहित्य में लिया जा सकता है जिनके कारण आलोचना साहित्य में मनोविश्लेषण और जुगुप्सित यथार्थ के प्रति विशेष दृष्टिकोण के कारण इनके चिन्तन में कुछ परंपरा विरोधी तत्वों का आविर्भाव हुआ ।

आधुनिक तेलुगु साहित्य में आलोचना के सिद्धान्त एक आन्दोलन के रूप में उद्भूत हुए । इस आन्दोलन के प्रवर्तक हैं कंदुकूरि वीरेशलिंगम् पंतुलु जी (1848-1919) । इनके युग को आलोचना के क्षेत्र में विकास युग माना जाता है। इस युग में जुलूरि अप्पय्या, गरिमेल्ल वेंकय्या, पैडिपाटि वेंकटनरसु, मुलुपाक बुच्चय्या शास्त्री, कावलि सोदरुलु, मल्लंपल्लि मल्लिकार्जुन शास्त्री आदि के द्वारा काव्य की व्याख्या अक्षर रूप में विकसित हुई । उपर्युक्त सभी आलोचक सी.पी.ब्रौन से प्रभावित हुए हैं। सन् 1880 ई से 1951 ई तक के युग को काव्यानुशीलन युग कहा जाता है। इस युग के प्रवर्तक हैं कट्टमंचि रामलिंगारेड्डी । कट्टमंचि पाश्चात्य स्वच्छन्दतावाद से प्रभावित हुए जिसे तेलुगु में "काल्पनिकोद्यमम्" कहते हैं। आलोचना में स्वेच्छा, सृजनात्मकता, कविता का तत्वाविवेचन आदि इस आन्दोलन या वाद के प्रमुख लक्षण थे । कट्टमंचि का ग्रन्थ "कवित्वतत्व विचारमु" इनके लक्षणों के लिए एक प्रतीक के रूप में ठहरा । इन्होंने साहित्य में "भावना शक्ति" को प्रधानता दी । यह "भावनाशक्ति" विलियम वर्ड्सवर्थ के इमैजिनेशन के अति निकट है। कालरिड्ज का प्रभाव भी इन आलोचकों पर था । कट्टमंचि ने अपनी आलोचना में "रस" "रसाभास" शब्दों का प्रयोग किया जो पाश्चात्यों के "इमोटिव एक्सपीरियन्स" से संबंधित है। इसके अतिरिक्त इस युग में आलोचक सी.शेली, एड्गर एलन पो और कीट्स से प्रभावित हुए थे, वे हैं राल्लपल्लि अनन्त कृष्णशर्मा (1893-1979) और दुव्वूरी रामिरेड्डी इन्होंने अंग्रेजी के

"लिटरेरी एस्थिटिक्स" को साहित्य सौंदर्य मीमांसा" नामक नये आलोचना सिद्धान्त के रूप में आधुनिक तेलुगु साहित्य में लाने का यत्न किया ।

आधुनिक तेलुगु साहित्य की आलोचना का तीसरा विकसित युग है काव्यशिल्पानुशीलन युग । इस युग के प्रवर्तक हैं श्री विश्वनाथ सत्यनारायण सन् 1850 ई॰ से 1950 ई॰ तक अर्थात् एक शताब्दी तक जो साहित्यक आलोचना हुई थी तेलुगु में उसके प्रयोक्ता के रूप में श्री विश्वनाथ जी रहे। पाश्चात्य आलोचक मैथ्यू आर्नल्ड वाल्टर पेटर, टी॰एस॰इलियट,आई॰ए॰रिचर्डस् से विश्वनाथ जी प्रभावित रहे । इन्होंने आधुनिक तेलुगु साहित्य के अनेक आलोचना सिद्धांतों की चर्चा करतेहुए कई आलोचनाग्रंथ लिखे ।

चौथा युग समन्वय युग (सन् 1963 ई - 1970 ई तक) है ।। इस युग में सृजनात्मक आलोचना के परिप्रेक्ष्य में समन्वयात्मक और विश्लेषणात्मक आलोचना का महत्व अधिक था । इस युग के आलोचकों के रूप में पिंगलि लक्ष्मीकांतम्, जी॰वी॰कृष्णाराव, डा0 सी नारायण रेड्डी तथा आर॰एस॰सुदर्शनम् का नाम लिया जाता है । इन्होंने भारतीय आलोचना के सिद्धांत और पाश्चात्य आलोचना के सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन किया । प्रथम तीन युगों में तेलुगु साहित्य की आलोचना अनुभूति के रूप में थी लेकिन समन्वय युग में वह विचार के स्तर पर पहुँच गयी।

अंतिम युग है समीक्षा युग जिसमें मार्क्सवादी आलोचना का अत्यधिक प्रभाव रहा है, वह सन् 1970 ई से शुरू होता है । इस युग के अंतर्गत श्री-श्री, कोडवटिगंटि कुटुंबराव, कुंदुर्ति आंजनेयुलु आदि का नाम लिया जाता है । श्री-श्री ने "अभ्युदयवाद" नाम से एक आन्दोलन के रूप में मार्क्सिज़्म को अपनाया था । कुंदुर्ति ने मार्क्सिज़म् द्वारा "सामाजिक चेतना" (सामाजिक स्पृह) को

अपनाकर मुक्तछन्द {वचन} कविता प्रक्रिया के विकास के लिए अत्यधिक परिश्रम किया । इसी युग के अंतर्गत प्रतीकवाद नाम से नए आलोचना - सिद्धांत का जन्म हुआ । इस सिद्धांत के उदाहरण रूप में श्री गुंटूरु शेषेन्द्र शर्मा को लिया जाता है ।

इन आलोचकों के अतिरिक्त आधुनिक तेलुगु साहित्य के आलोचना के सिद्धांतों के विकास में कई लेखकों और कवियों का भी योगदान रहा है । इनमें गुरजाड अप्पाराव, रायप्रोलु सुब्बाराव, देवुलपल्लि कृष्ण शास्त्री, गोपीचन्द, बुच्चिबाबु आदि का नाम लिया जाता है । आधुनिक तेलुगु साहित्य में रस सिद्धांत को लेकर आधुनिक आलोचना हुई थी। हिंदी साहित्य में शुक्ल जी के समान देवुलपल्लि कृष्णशास्त्री जी और जी•वी•सुब्रमण्यम ने इस रस सिद्धांत की नवीन व्याख्या की थी । इस प्रकार आधुनिक तेलुगु साहित्य के आलोचना के सिद्धांतों का विकास हुआ ।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध विषय को इन आठ अध्यायों में विभाजित किया जा सकता है, वे हैं - प्रथम अध्याय - हिंदी और तेलुगु साहित्य में आलोचना : परिभाषाएं और स्वरूप - विश्लेषण, द्वितीय अध्याय - हिंदी में भारतीय {संस्कृत} काव्यशास्त्र से गृहीत सिद्धांतों का विकास, तृतीय अध्याय - तेलुगु में भारतीय {संस्कृत} काव्यशास्त्र से गृहीत सिद्धांतों का विकास, चतुर्थ अध्याय - हिंदी पाश्चात्य काव्यशास्त्र से गृहीत सिद्धांतों का विकास, पंचम अध्याय - तेलुगु में पाश्चात्य काव्यशास्त्र से गृहीत सिद्धांतों का विकास, षष्ट अध्याय - आधुनिक हिंदी आलोचना का सत्व: सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में, सप्तम अध्याय - आधुनिक तेलुगु आलोचना का सत्व : सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में । इस अध्ययन योजना में मेरा लक्ष्य यही रहा है कि हिंदी और तेलुगु साहित्यों के माध्यम से तुलनात्मक शोध और आलोचना की प्रविधि के विषय में, उसका सत्व निरूपित किया जा सके ।

अंत में, मैं उन सभी विद्वानों एवं श्रेयोभिलाषियों के प्रति आभार

ज्ञापित करती हूँ जिनसे मुझे शोधक्रम में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है । इस क्रम में, मैं सर्वप्रथम केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के हिंदी विभाग की विभागाध्यक्षा एवं मेरी शोध निर्देशिका, प्रोफ़ेसर शशि मुदिराज जी का नाम लेनाचाहूँगी । मैं अति भाग्यशालिनी हूँ कि मुझे डा० शशि मुदिराज जी के निर्देशन में काम करने का शुभ अवसर मिला, जिनकी सतत प्रेरणा और निरंतर मार्गदर्शन के साथ यह कठिन शोध कार्य पूर्ण हुआ है । शोधावधि में आपके साथ सुदीर्घ सम्पर्क में रहकर मुझे निम्नलिखित शेर की सत्यता का वास्तव में एहसास हुआ :

"जिनसे मिलकर जिन्दगी से इश्क हो जाये
ऐसे लोग शायद आपने न देखे हों मगर होते तो हैं ।"

मेरे इस शोध प्रबंध के विषय में मेरी माता जी श्रीमती अमीरुन्निसा बेगम साहिबा और मेरे पतिदेव श्री अब्दुल हमीद ख़ान जी के प्रति बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने न केवल इस कार्य के लिये मुझे अत्यंत प्रोत्साहन, प्रेरणा एवं सहयोग दिया बल्कि पारिवारिक दायित्वों एवं चिंता से मुझे हमेशा मुक्त रखकर, पढ़ने - लिखने की ओर प्रेरित किया है । मेरे श्रेयोभिलाषी डा० यशवंत जाधव जी विभागाध्यक्ष (हिंदी), डा० बी•आर•अम्बेडकर विश्वविद्यालय और श्रीमती एवं श्री श्रुतिकांत भारती जी के प्रोत्साहन के प्रति मैं शब्दों में कृतज्ञता प्रकट नहीं कर सकती क्योंकि शब्द सीमित होते हैं और मेरा कृतज्ञता भाव असीमित है ।

इन महानुभावों के अलावा जिन विद्वानों, गुरुजनों, अभिभावक तुल्य बुजुर्गों एवं मित्रों का आशीर्वाद एवं स्नेह मुझे हमेशा से प्राप्त होता रहा है उनकी भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ ।

पुन: एक बार मैं उन तमाम रचनाकारों एवं आलोचकों की हृदय से आभारी हूँ, जिनके सुचिंतित लेखन के अध्ययन से अपने शोध - विषय के संदर्भ में, मेरी समझ थोड़ी विकसित हो सकी है ।

शकीला
(शकीला ख़ानम)

विषय सूची

			पृ सं
प्रथम अध्याय		हिन्दी और तेलुगु साहित्य में आलोचना : परिभाषाएं और स्वरूप विश्लेषण	12-35
	1.	आलोचना की परिभाषा	
		अ. हिन्दी	
		ब. तेलुगु	
	2.	हिन्दी में आलोचना का उद्भव और विकास	
	3.	तेलुगु में आलोचना का उद्भव और विकास	
द्वितीय अध्याय		हिन्दी में भारतीय (संस्कृत) काव्य शास्त्र से गृहीत सिद्धांतों का विकास	36-98
	1.	रस सिद्धांत और उसका विकास	
	2.	अलंकार सिद्धांत और उसका विकास	
	3.	रीति सिद्धांत और उसका विकास	
	4.	ध्वनि सिद्धांत और उसका विकास	
	5.	औचित्य सिद्धांत और उसका विकास	
	6.	वक्रोक्ति सिद्धांत और उसका विकास	
तृतीय अध्याय		तेलुगु में भारतीय (संस्कृत) काव्य-शास्त्र से गृहीत सिद्धांतों का विकास	99-124
	1.	रस सिद्धांत का विकास	
	2.	अलंकार सिद्धांत का विकास	
	3.	रीति सिद्धांत का विकास	

पृ सं

4. ध्वनि सिद्धांत का विकास
5. औचित्य सिद्धांत का विकास
6. वक्रोक्ति सिद्धांत का विकास

चतुर्थ अध्याय — हिन्दी में पाश्चात्य काव्य-शास्त्र से गृहीत सिद्धांतों का विकास — 125-165

अ. 1. प्लेटो
2. अरस्तू
3. लोंजाइनस
4. होरेस
5. दांते

आ. 1. क्रोचे का अभिव्यंजनावाद यथार्थवादी सिद्धांत और उसका विकास
2. मार्क्सवाद और उसका विकास
3. मानवतावाद और उसका विकास
4. बिम्बवाद और उसका विकास
5. प्रतीकवाद और उसका विकास

पंचम अध्याय — तेलुगु में पाश्चात्य काव्य शास्त्र से से गृहीत सिद्धांतों का विकास — 166-192

अ. आधुनिक तेलुगु साहित्य पर पाश्चात्य-आलोचना का प्रभाव

आ. 1. काल्पनिकवाद का विकास
2. हेतुवाद का विकास
3. अभ्युदयवाद का विकास
4. अस्तित्ववाद का विकास
5. अनुभूतिवाद का विकास
6. विप्लववाद का विकास

		पृ सं
षष्ठ अध्याय	आधुनिक हिन्दी आलोचना का का सत्व : सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में	195-220
सप्तम अध्याय	आधुनिक तेलुगु आलोचना का सत्व : सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में	221-239
अष्टम अध्याय	उपसंहार	240-259

सहायक ग्रन्थ सूची — 260-275

1. हिन्दी ग्रन्थ सूची
2. तेलुगु ग्रन्थ सूची
3. हिन्दी-पत्रिकायें
4. तेलुगु-पत्रिकायें

=-=-=-=-=